CHAITANYA SCIENCE AND ARTS COLLEGE

(AUTONOMOUS)

PAMGARH, JANJGIR-CHAMPA (C.G.)

ACCREDITED "A" GRADE BY NAAC

DEPARTMENT OF HINDI

COURSE CURRICULUM & MARKING SCHEME

POSTGRADUATE PROGRAMME

M.A. HINDI

PROGRAM CODE: CCMA01
THIRD & FOURTH SEMESTER

Approved By	Board of Studies	Academic Council
Date	16/08/26	

ACADEMIC YEAR 2026-27

SYLLABUS FRAMED ACCORDING TO THE NEP-2020
UNDER THE SCHEME OF CBCS (CHOICE BASED CREDIT SYSTEM)

Phone No:07818299005

Website: https://chaitanyacg.ac.in/ **Email:**principalchaitanya417@gmail.com

चैतन्य विज्ञान एवं कला महाविद्यालय

(यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त एक स्वायत्त संस्थान)

पामगढ़, जिला – जांजगीर – चांपा (छत्तीसगढ़), 495554

सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी

तृतीय सेमेस्टर

सेमेस्टर	प्रश्न पत्र	कोर्स कोड	विषय / प्रश्न पत्र का नाम	अंक विभाजन		
				सेमेस्टर परीक्षा	आतंरिक मूल्याकंन	पूर्णांका
तृतीय सेमेस्टर	1	MHNT301	भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन	70	30	100
	2	MHNT302	छायावादी काव्य	70	30	100
	3	MHNT303	प्रयोजनमूलक हिंदी	70	30	100
	4	MHNT304	भारतीय साहित्य	70	30	100
	5	MHNT305	अनुवाद विज्ञान	70	30	100
					योग	500

चतुर्थ सेमेस्टर

सेमेस्टर	प्रश्न पत्र	कोर्स कोड	विषय / प्रश्न पत्र का नाम	अंक विभाजन		
				सेमेस्टर परीक्षा	आतंरिक मूल्याकंन	पूर्णांक
चतुर्थ सेमेस्टर	1	MHNT301	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	70	30	100
	2	MHNT302	छायावादोत्तर काव्य	70	30	100
	3	MHNT303	पत्रकारिता प्रशिक्षण	70	30	100
	4	MHNT304	रंगमंच और लोक–साहित्य	70	30	100
	5	MHNT305	वैकल्पिक परियोजना कार्य – विशिष्ट रचनाकार का अध्ययन वैकल्पिक - लघु शोध प्रबंध	70	30	100
					योग	500

16/08/26

पाठ्यक्रम: सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी

सेमेस्टर: तृतीय सेमेस्टर

प्रश्न पत्र: अनिवार्य प्रश्न पत्र

विषय: भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

कोर्स कोड : MHNT301

पाठ्यक्रम अधिगम–परिणाम (Course Learning outcome)

भारतीय काव्यशास्त्र की ऐतिहासिक परंपरा, सिद्धांतों तथा समकालीन आलोचना प्रवृत्तियों की सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप को समझाना।

- रस, अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य जैसे प्रमुख काव्य–सिद्धांतों की मूल अवधारणाओं, परिभाषाओं, भेदों और उनके पारस्परिक संबंधों को विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से अवगत कराना।
- काव्य के प्रयोजन, लक्षण, भेद तथा काव्यगुणों की पहचान कर काव्य विवेचना में रस निष्पत्ति, साधारणीकरण और सहृदयता जैसे तत्वों का प्रभाव से अवगत कराना।
- आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह जैसे प्रमुख आलोचकों की दृष्टियों का तुलनात्मक अध्ययन कर आलोचना के विविध दृष्टिकोणों शास्त्रीय, समाजशास्त्रीय, मार्क्सवादी, सौंदर्यशास्त्रीय आदि की गहन समझ से परिचय कराना।
- यह पाठ्यक्रम छात्रों को भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांतों की बौद्धिक गहराई, तार्किकता और साहित्यिक मूल्यांकन में दक्ष बनाता है, जिससे वे भावी शोध, शिक्षण एवं आलोचनात्मक लेखन के लिए सशक्त आधार प्राप्त कर सकते हैं।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 (15 घंटे)

- काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य प्रकार, काव्य के भेद।
- हिंदी काव्यशास्त्र का इतिहास।
- भरतमुनि का रस सिद्धांत, रस निरूपक आचार्य।
- रस के अंग, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा, रस तथा भाव का संबंध, रस के अवयव।
- शब्द शक्तियाँ – अर्थ और भेद।

इकाई–02 (15 घंटे)

- अलंकार सिद्धांत– मूल स्थापनाएँ और मूल्यांकन, अलंकारों का वर्गीकरण।
- रीति सिद्धांत, रीति की अवधारणा, काव्यगुण, रीति और शैली, रीति के भेद, रीति गुण – दोष, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएं।

16/08/26

इकाई–03 (15 घंटे)

- ध्वनि सिद्धांत, ध्वनि का अर्थ, लक्षण, स्वरूप, काव्यात्मा का रूप में ध्वनि, ध्वनि तथा रस सिद्धांत का संबंध, ध्वनि सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के भेद।
- औचित्य सिद्धांत– अर्थ; परिभाषा, स्वरूप, प्रमुख स्थापना, औचित्य के भेद।

इकाई–04 (15 घंटे)

- हिंदी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ, शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी, मनोविश्लेषणवादी, सौंदर्यशास्त्रीय, शैली वैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय।
- समकालीन आलोचना की अवधारणा, आधुनिक हिंदी आलोचना के प्रमुख आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल और रस दृष्टि तथा लोक मंगल की अवधारणा, नंददुलारे वाजपेयी सौष्ठववादी आलोचना, रामविलास शमारू मार्क्सवादी आलोचना।
- शुक्लोत्तर समीक्षा और समीक्षकरू आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नामवर सिंह, विजयदेव नारायण साही, समकालीन आलोचना, आधुनिक भावबोध, अर्थ, विशेषताएँ, महत्त्व।

संदर्भ–ग्रंथ

1. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका — डॉ. नगेन्द्र
2. भारतीय काव्यशास्त्र — डॉ. उदयभानु सिंह
3. भारतीय काव्यशास्त्र — डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
4. भारतीय काव्यशास्त्र — डॉ. भागीरथी मिश्र
5. रस मीमांसा — डॉ. रामचंद्र शुक्ल
6. रस सिद्धांत —डॉ. नगेन्द्र
7. भारतीय आलोचना शास्त्र — डॉ. राजवंश सहाय
8. हिंदी आलोचना — डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी

ई–संसाधन (E-Resources):

1. ई जर्नल्स, ई पुस्तकें, दृश्य–श्रव्य सामग्री, वीडियो व्याख्यान, इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस, ई–शोधलेख।
2. www.ndl.iitkgp.ac.in (National Digital Library of India)

16/02/26

पाठ्यक्रम: सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी

सेमेस्टर: तृतीय सेमेस्टर

प्रश्न पत्र: अनिवार्य प्रश्न पत्र

विषय : छायावादी काव्य

कोर्स कोड : MHNT302

पाठ्यक्रम अधिगम–परिणाम (Course Learning outcome)

छायावादी काव्य हिंदी साहित्य का केंद्रीय एवं महत्वपूर्ण पड़ाव है। छायावादी काव्य की भाषा चिंतन, काव्य प्रतीक एवं काव्य शैली हिंदी साहित्य परंपरा में अपनी अहम भूमिका का निर्वहन करती है।

- छायावाद काव्य की विविध प्रवृत्तियों, काव्यशैली एवं काव्यदृष्टि की गहन अध्ययन करना।
- जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी शनिरालाश, महादेवी वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, जैसे कवियों की

रचनाओं के माध्यम से विद्यार्थी काव्य में निहित राष्ट्रबोध, आध्यात्मिकता, संवेदना, प्रकृति चित्रण तथा सामाजिक चेतना का समीक्षात्मक मूल्यांकन करना सीखेंगे।

- कवियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को सामाजिक–ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से अवगत कराना।
- छायावादी कवियों की काव्य भाषा, प्रतीक योजना, शिल्प सौंदर्य एवं शैलीगत विशिष्टताओं का अध्ययन करना।

पाठ्य विषयः–

इकाई–01 (15 घंटे)

- छायावाद : परिभाषा, नामकरण, काल–निर्धारण।
- स्वच्छंदतावादी काव्यधारा, छायावाद की राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश।
- स्वाधीनता आंदोलन में छायावादी कविता का अवदान।

इकाई–02 (15 घंटे)

- छायावादी कवियों का संस्कृतिबोध, प्रकृति चित्रण, स्त्री विषयक चिंतन।
- काव्यभाषा छंद विधान, मुक्त छंद, प्रगीत तथा लंबी कविता की अवधारणा।
- छायावाद के प्रमुख कवियों का आलोचनात्मक अध्ययन।

इकाई–03 (15 घंटे)

- जयशंकर प्रसाद : कामायनी – चिंता, श्रद्धा सर्ग।
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : राम की शक्ति पूजा, बादलराग।
- व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन।

16/08/26

इकाई–04 (15 घंटे)

- सुमित्रानंदन पंत : परिवर्तन, नौका विहार।
- महादेवी वर्मा : क्या पूजा क्या अर्चन रे, बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।
- व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन।

संदर्भ–ग्रंथ :

- कामायनी एवं पुनर्मूल्यांकन — श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी
- कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ — डॉ. नगेन्द्र
- कवि निराला — आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महाकाव्य — डॉ. निजामुद्दीन
- छायावाद का पतन — देवराज
- निराला की साहित्य साधना — रामविलास शर्मा
- आधुनिक साहित्य — नंददुलारे वाजपेयी

ई–संसाधन (E-Resources):-

1. ई जर्नल्स, ई पुस्तकें, दृश्य–श्रव्य सामग्री, वीडियो व्याख्यान, इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस, ई–शोधलेख।
2. www.ndl.iitkgp.ac.in (National Digital Library of India)

16/08/26

पाठ्यक्रम: सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी

सेमेस्टर: तृतीय सेमेस्टर

प्रश्न पत्र: अनिवार्य प्रश्न पत्र

विषय: प्रयोजनमूलक हिंदी

कोर्स कोड : MHNT303

पाठ्यक्रम अधिगम–परिणाम (Course Learning outcome)

प्रयोजनमूलक हिंदी की अवधारणा, स्वरूप तथा हिंदी भाषा के विविध आयामों को समझना और उसका कार्यालयीन उपयोग से अवगत कराना है।

- प्रयोजनमूलक हिंदी के स्वरूप को समझना।
- कार्यालयों में प्रयुक्त होने वाली हिंदी के विविध पक्षों से परिचित होना।
- विद्यार्थियों में कार्यालयीन एवं व्यावहारिक हिंदी के प्रति अभिरुचि पैदा करना।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 (16 घंटे)

- प्रयोजनमूलक हिंदी का स्वरूप एवं आशय।
- प्रयोजनमूलक हिंदी विभिन्न प्रयुक्तियाँ, प्रशासनिक भाषा के रूप में खड़ी बोली का विकास।

इकाई–02 (15 घंटे)

- हिंदी के विविध रूप : राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सृजनात्मक भाषा, संचार भाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा।
- कार्यालयीन हिंदी : हिंदी राजभाषा के प्रमुख प्रकार प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण, पारिभाषिक शब्दावली, परिभाषा, विशेषताएँ और प्रकार।
- पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत, उदाहरण एवं उनका व्यावहारिक प्रयोग।

इकाई–03 (15 घंटे)

- राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति एवं व्यवहार, संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधान, राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा नियम 1976, भारत सरकार के राजभाषा संबंधी अनुदेश, राजभाषा क्रियान्वयन के विविध पहलू।

इकाई–04 (15 घंटे)

- हिंदी कंप्यूटिंग : कंप्यूटर परिचय, रूपरेखा, उपयोग, तथा वेब पब्लिशिंग का परिचय।
- इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय, प्राथमिक रखरखाव, हिंदी के प्रमुख पोर्टल, डाउनलोडिंग, अपलोडिंग हिंदी सॉफ्टवेयर, यू–ट्यूब।
- वेब पब्लिकेशन्न, इंटरनेट एक्सप्लोरर अथवा नेट्सकैप कम्युनिकेटर लिंक बालजिंग ईमेल भेजना व प्राप्त करना।

16/08/26

संदर्भ–ग्रंथ

1. प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी — डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया
2. हिंदी का आधुनिकीकरण एवं मानकीकरण — प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल
3. प्रयोजनमूलक हिंदी विविध परिदृश्य — डॉ. रमेश चंद्र त्रिपाठी
4. हिंदी भाषा : इतिहास और स्वरूप — डॉ. राजमणि शर्मा
5. पारिभाषिक शब्दावली — डॉ. भोलानाथ तिवारी, डॉ. महेन्द्र चतुर्वेदी
6. राजंभाषा हिंदी, नियम पुस्तिका, राजभाषा विभाग — गृह मंत्रालय नई दिल्ली
7. प्रयोजनमूलक हिंदी — डॉ. रामछबीला त्रिपाठी

ई–संसाधन (E-Resources) :-

1. ई जर्नल्स, ई पुस्तकें, दृश्य–श्रव्य सामग्री, वीडियो व्याख्यान, इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस, ई–शोधलेख्ज़ं
2. www.ndl.iitkgp.ac.in (National Digital Library of India)

16/08/26

पाठ्यक्रम: सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी

सेमेस्टर: तृतीय सेमेस्टर

प्रश्न पत्र: अनिवार्य प्रश्न पत्र

विषय : भारतीय साहित्य

कोर्स कोड : MHNT304

पाठ्यक्रम अधिगम–परिणाम (Course Learning outcome)

भारतीय साहित्य की अवधारणा, उसकी सांस्कृतिक व्यापकता तथा विविध भाषाओं में उसकी अभिव्यक्ति से अवगत कराना है।

- विद्यार्थी हिंदी सहित बंगला, उड़िया, असमिया और कन्नड़ साहित्य के प्रमुख रचनाकारों और कृतियों से परिचित होंगे।
- तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से भारत की भाषिक और सांस्कृतिक एकता की गहरी समझ विकसित कर सकेंगे।
- प्रस्तुत काव्य, नाटक और उपन्यासों के अध्ययन से विद्यार्थियों में संवेदनात्मक, वैचारिक और सौंदर्यपरक विश्लेषण की क्षमता को विकसित कराना है।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 (15 घंटे)

- भारतीय साहित्य का अवधारणा एवं स्वरूप।
- भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिम्ब।
- भारतीय साहित्य के इतिहास की संकल्पना।
- हिंदी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति एवं अध्ययन की समस्याएँ।

इकाई–02 (15 घंटे)

- भारतीय साहित्य – बंगला, उड़िया तथा असमिया भाषा के साहित्य का इतिहास, प्रमुख कृतिकारों का परिचय एवं महत्वपूर्ण कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन।

इकाई–03 (15 घंटे)

- कविता संग्रह– वर्षा की सुबह (उड़िया) सीताकांत महापात्र।
- नाटक – हयवदन (कन्नड़) गिरीश कर्नाड।

इकाई–04 (15 घंटे)

- उपन्यास – अग्निगर्भा (बांग्ला) महाश्वेता देवी

संदर्भ–ग्रंथ

1. भारतीय साहित्य –– संपादक डॉ. नगेन्द्र
2. भारतीय साहित्य –– लक्ष्मीकांत पाण्डेय एवं प्रमिला अवस्थी
3. हिंदी साहित्य का इतिहास –– डॉ. नगेन्द्र
4. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका –– प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी
5. भारतीय साहित्य अध्ययन की नई दिशाएं –– डॉ. प्रदीप श्रीधर
6. बांग्ला साहित्य का इतिहास –– भारतीय भाषा संस्थान, इलाहाबाद
7. भारतीय भाषाओं के साहित्य का इतिहास –– केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली
8. आज का भारतीय साहित्य –– साहित्य अकादमी

ई-संसाधन (E-Resources) :-

1. ई जर्नल्स, ई पुस्तकें, दृश्य–श्रव्य सामग्री, वीडियो व्याख्यान, इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस, ई–शोधलेख।
2. **w.w.w.ndl-iitkgp-ac-in National Digital Library of India** *(नोट: इमेज में यूआरएल इसी तरह अंकित है)*

16/08/26

पाठ्यक्रम: सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी
सेमेस्टर: तृतीय सेमेस्टर
प्रश्न पत्र: अनिवार्य प्रश्न पत्र
विषय : अनुवाद विज्ञान
कोर्स कोड : MHNT305

पाठ्यक्रम अधिगम–परिणाम (Course Learning outcome)
अनुवाद के सामाजिक, सांस्कृतिक पहलुओं से अवगत कराना साथ ही उसके सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक महत्व को समझना।

- अनुवाद की मूल अवधारणा, स्वरूप, क्षेत्र और सीमाओं से परिचय कराना।
- विभिन्न प्रकार के अनुवादकृसाहित्यिक, कार्यालयीन, तकनीकी, मीडिया, विज्ञापन आदि की विशेषताओं व प्रवृत्तियों को समझकर उनका प्रयोग करने में सक्षम होंगे।
- जनसंचार माध्यम, अन्य आधुनिक तकनीकी विषय क्षेत्रों के पारिभाषिक शब्द निर्माण प्रक्रिया से परिचित कराना।
- अनुवाद पुनरीक्षण तथा मूल्यांकन का कार्य से अवगत कराना।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 (15 घंटे)

- अनुवाद : परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएँ, अनुवाद का स्वरूप: अनुवाद कला, विज्ञान और शिल्प, अनुवाद की इकाई: शब्द पदबंध, वाक्य पाठ, अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि: विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन।

इकाई–02 (15 घंटे)

- अनुवाद प्रक्रिया के विविध आयाम :
- स्रोत भाषा के पाठ का विश्लेषण तथा अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया।
- स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के बीच तुलनात्मक अध्ययन तथा अर्थांतरण की प्रक्रिया।
- अनुवादित पाठ का पुनर्निर्माण और अर्थ के प्रभावी संप्रेषण की प्रक्रिया।
- अनुवाद प्रक्रिया में प्रवृत्तियों और उपागमों का विश्लेषण।

इकाई–03 (15 घंटे)

- अनुवाद की अवधारणा और प्रकृति, अनुवाद के प्रकार।
- अनुवाद के उपकरण – कोश, पारिभाषिक शब्दावली, थिसारस, कम्प्यूटर आदि।
- अनुवाद पुनरीक्षण, संपादन और मूल्यांकन, मशीनी अनुवाद के प्रयोग और सीमाएँ।
- अनुवाद की उपयोगिता वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता और व्यावसायिक दृष्टिकोण।

16/08/26

इकाई–04 (15 घंटे)

- अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धांत।
- अनुवाद के क्षेत्र : कार्यालयी अनुवाद, वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद, साहित्यिक, मानविकी, संचार माध्यम, विज्ञापन जगत का अनुवाद आदि।
- अनुवाद की समस्याएं : सृजनात्मक एवं साहित्यिक अनुवाद की चुनौतियाँ, कार्यालयी अनुवाद में आने वाली अड़चनें, कोश एवं पारिभाषिक शब्द निर्माण की समस्याएँ।

संदर्भ–ग्रंथ

1. अनुवाद विज्ञान — डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. अनुवाद कला सिद्धांत और प्रयोग — डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया
3. व्यावहारिक अनुवाद — डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी
4. अनुवाद क्या है — संपादक राजमल बोरा
5. अनुवाद प्रक्रिया — डॉ. रामनारायण पटेल
6. अनुवाद विज्ञान — डॉ. जयश्री शुक्ल

ई–संसाधन (E-Resources) :-

1. ई जर्नल्स, ई पुस्तकें दृश्य – श्रव्य सामग्री, वीडियो व्याख्यान, इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस, ई–शोधलेख
2. www.ndl.iitkgp.ac.in (National Digital Library of India)

16/08/26

पाठ्यक्रम: सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी

सेमेस्टर: **चतुर्थ** सेमेस्टर

प्रश्न पत्र: अनिवार्य प्रश्न पत्र

विषय : पाश्चात्य काव्यशास्त्र

कोर्स कोड: MHNT401

पाठ्यक्रम अधिगम–परिणाम (Course Learning outcome)

साहित्यिक सिद्धांतों, आलोचना परंपराओं, वादों और रचना विश्लेषण की सम्यक् समझ विकसित करना है, जिससे वे शोध, मूल्यांकन और रचनात्मक लेखन में दक्ष बन सकें।

- विद्यार्थी भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य सिद्धांतों की मूल अवधारणाओं को समझ सकेंगे।
- आलोचकों के विचारों के माध्यम से विश्लेषण और आलोचना की दृष्टि विकसित होगी।
- प्रमुख साहित्यिक वादों और आंदोलनों की पहचान कर उनके प्रभावों का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- साहित्यिक पाठों का व्यावहारिक विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होगी।
- शोध लेखन, तार्किक विवेचन और मौलिक अभिव्यक्ति की योग्यता में वृद्धि होगी।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 (15 घंटे)

- **प्लेटो :** काव्य सिद्धांत
- **अरस्तू :** अनुकरण सिद्धांत, त्रासदी विवेचन का विश्लेषण
- **लोंजाइनस :** उदात्त की संकल्पना और उसकी विशेषताएँ

इकाई–02 (15 घंटे)

- **वर्ड्सवर्थ :** काव्य की अवधारणा और उसकी प्रकृति का विवेचन
- **कॉलरिज :** कल्पना के सिद्धांत का प्रतिपादन
- **मैथ्यू आर्नल्ड :** आलोचना के स्वरूप और उद्देश्य की विवेचना

इकाई–03 (15 घंटे)

- **टी.एस. इलियट :** परंपरा की परिकल्पना और वैयक्तिकप्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण, संवेदनशीलता का असाहचर्य
- **आई. ए. रिचर्ड्स :** रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना

इकाई–04 (15 घंटे)

- **सिद्धांत और वाद :** अभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद तथा अस्तित्ववाद।

संदर्भ–ग्रंथ

1. **भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र** — डॉ. गणपति चंद्रगुप्त
2. **पाश्चात्य काव्यशास्त्र** — डॉ. विजय बहादुर सिंह
3. **साहित्य सिद्धांत** — श्री रामअवध द्विवेदी
4. **साहित्य समीक्षा के मापदंड** — डॉ. राजेन्द्र कुमार
5. **पाश्चात्य काव्यशास्त्र** — देवेन्द्रनाथ शर्मा

ई–संसाधन (E-Resources) :-

1. ई जर्नल्स, ई पुस्तकें दृश्य – श्रव्य सामग्री, वीडियो व्याख्यान, इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस, ई–शोधलेख।
2. www.ndl.iitkgp.ac.in (National Digital Library of India)

16/08/26

पाठ्यक्रम: सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी

सेमेस्टर: चतुर्थ सेमेस्टर

प्रश्न पत्र: अनिवार्य प्रश्न पत्र

विषय: छायावादोत्तर काव्य

कोर्स कोड: MHNT402

पाठ्यक्रम अधिगम–परिणाम (Course Learning outcome)

- आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख रचनाकारों अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन एवं अन्य समकालीन कवियों की रचनाओं, काव्य–शिल्प, विचारात्मक दृष्टि और सौंदर्यबोध के गहन अध्ययन को केंद्र में रखता है, जिससे विद्यार्थियों में समालोचनात्मक दृष्टि, रचनात्मक समझ और सामाजिक–सांस्कृतिक बोध विकसित करना है।
- अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन और अन्य कवियों की प्रतिनिधि कविताओं का गहन अध्ययन एवं सृजनात्मक विवेचन कर सकेंगे।
- कवियों के जीवन, रचना–यात्रा और उनके वैचारिक विकास की ऐतिहासिक एवं सैद्धांतिक समझ विकसित करना।
- काव्य सौष्ठव एवं शिल्प विश्लेषण छंद, भाषा, प्रतीक, बिंब, संरचना और शैली की विशेषताओं को समझने एवं व्याख्यायित करने की क्षमता विकसित करना।
- आलोचनात्मक एवं वैचारिक दृष्टिकोण का विकास पाठ और प्रसंग के भीतर छिपे सामाजिक, राजनीतिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक संकेतों को पहचानने व आलोचनात्मक विश्लेषण करने की दृष्टि निर्मित करना है।

पाठ्य विषय

इकाई–01 (15 घंटे)

- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'
- नदी के द्वीप, असाध्य वीणा, यह द्वीप अकेला, कलगी बाजरे की, हरी घास पर क्षण भर, अंतसलिला, आंगन के पार द्वार।
- व्याख्या एवं आलोचना 'अज्ञेय' व्यक्तित्व एवं कृतित्व, काव्य सौष्ठव, विशेषताएँ।

इकाई–02 (15 घंटे)

- गजानन माधव मुक्तिबोध
- ब्रह्मराक्षस, चांद का मुंह टेढ़ा है, भूल गलती।
- व्याख्या एवं आलोचना गजानन माधव मुक्तिबोध व्यक्तित्व एवं कृतित्व, काव्य सौष्ठव, विशेषताएँ।

16/08/26

इकाई–03 (15 घंटे)

- नागार्जुन
- बादल को घिरते देखा है, सतरंगे पंखों वाली, सिंदूर तिलकित भाल, विप्लव देखा हमने, मैं मिलिट्री का बूढ़ा घोड़ा, युगधारा, बसंत की अगवानी, प्रेत का बयान।
- व्याख्या एवं आलोचना नागार्जुन व्यक्तित्व एवं कृतित्व, काव्य सौष्ठव, विशेषताएँ।

इकाई–04 (15 घंटे)

- द्रुतपाठ
- रचनाकारकृ श्रीकांत वर्मा, दुष्यंत कुमार, रघुवीर सहाय, नरेश मेहता, डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन।

संदर्भ–ग्रंथ

1. **छायावादोत्तर काव्य धारा** — डॉ. शिवमंगल शिव सुमन, डॉ. विजय बहादुर सिंह
2. **छायावादोत्तर हिंदी साहित्य** — डॉ. जगमोहन मिश्र
3. **नागार्जुन के काव्य में प्रगतिशील चिंतन** — डॉ. गोविंद के. बुरशें
4. **अज्ञेय का साहित्य चिंतन** — नामदेव जासूद
5. **आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास** — डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे

ई–संसाधन (E-Resources) :-

1. **ई जर्नल्स, ई पुस्तकें दृश्य** – श्रव्य सामग्री, वीडियो व्याख्यान, इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस, ई–शोधलेख।
2. www.ndl.iitkgp.ac.in (National Digital Library of India)

16/08/26

पाठ्यक्रम: सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी

सेमेस्टर: **चतुर्थ** सेमेस्टर

प्रश्न पत्र: अनिवार्य प्रश्न पत्र

विषय: पत्रकारिता प्रशिक्षण

कोर्स कोड: MHNT403

पाठ्यक्रम अधिगम–परिणाम (Course Learning outcome)

आज पत्रकारिता का स्वरूप बहुत व्यापक और बहुआयामी है। इसके माध्यम से एक नई सोच, नई दृष्टि विकसित होती है। यह ज्ञान, विचार, और सूचनाओं को जन–जन तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है।

- पत्रकारिता का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक परिप्रेक्ष्य से अवगत कराना।
- पत्रकारिता प्रशिक्षण के व्यावसायिक महत्त्व की जानकारी प्राप्त करना।
- सांस्कृतिक कार्य की दृष्टि से पत्रकारिता प्रशिक्षण का उपयोग करना सीख सकेंगे।
- पत्रकारिता के मूल्यों, दायित्वों से अवगत हो सकें।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 (15 घंटे)

- विश्व पत्रकारिता का उदय
- भारत में पत्रकारिता का आरंभ
- पत्रकारिता स्वरूप एवं पत्रकारिता केंद्रित साहित्य
- हिंदी पत्रकारिता का उद्‌भव–विकास

इकाई–02 (15 घंटे)

- संपादन कला के सामान्य सिद्धांत
- समाचार के विभिन्न स्रोत
- संवाददाता की अर्हता–श्रेणी एवं कार्य पद्धति
- पत्रकारिता से संबंधित लेखन संपादकीय, फीचर रिपोर्ताज, साक्षात्कार खोजी समाचार, अनुवर्तन (फॉलोअप) आदि की प्रविधि

इकाई–03 (15 घंटे)

- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता रेडियो, टी.वी., सिनेमा, वीडियो, मल्टीमीडिया और इंटरनेट पत्रकारिता, नवजनमाध्यम के अंतर्गत (ऑनलाइन पत्रकारिता, हिंदी ब्लॉग, हिंदी पत्र पत्रिकाएं, हिंदी ई–पोर्टल, हिंदी वेबसाइट्स तथा हिंदी विकीपीडिया)
- प्रिंट पत्रकारिता दृ मुद्रण कला, प्रुफ शोधन, ले आउट तथा पृष्ठ सज्जा
- पत्रकारिता प्रबंधन प्रशासनिक व्यवस्था, बिक्री तथा वितरण व्यवस्था

16/08/26

- मुक्त प्रेस की अवधारणा

इकाई–04 (15 घंटे)

- लोक संपर्क तथा विज्ञापन
- प्रसार भारती तथा सूचना प्रौद्योगिकी
- प्रेस संबंधित कानून तथा आचार संहिता
- प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तंभ के रूप में पत्रकारिता का दायित्व।

संदर्भ–ग्रंथ

1. **हिंदी पत्रकारिता** — कृष्ण बिहारी मिश्र
2. **हिंदी पत्रकारिता का वृहद इतिहास** — अर्जुन तिवारी
3. **इन्टरनेट पत्रकारिता — सुरेश कुमार**
4. **रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता** — हरिमोहन जी
5. **जनसंचार प्रकृति और परंपरा** — प्रो. सूर्यप्रकाश दीक्षित
6. **खोजी पत्रकारिता** — हरिमोहन जी

ई–संसाधन (E-Resources) :-

1. ई जर्नल्स, ई पुस्तकें दृश्य दृ श्रव्य सामग्री, वीडियो व्याख्यान, इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस, ई–शोधलेख।
2. www.ndl.iitkgp.ac.in (National Digital Library of India)

16/08/26

पाठ्यक्रम: सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी

सेमेस्टर: चतुर्थ सेमेस्टर

प्रश्न पत्र: अनिवार्य प्रश्न पत्र

विषय : रंगमंच एवं लोक–साहित्य

कोर्स कोड: MHNT404

पाठ्यक्रम अधिगम–परिणाम (Course Learning outcome)

रंगमंच और लोक–साहित्य का अन्योन्याश्रित संबंध है। लोक–साहित्य रंगमंच के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है। रंगमंच एक प्रस्तुत कला है जिसमें लोक–साहित्य का उपयोग कहानियों, गीतों और पात्रों को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से स्थानीय लोक संस्कृति और परंपराओं को समझा जा सकता है।

- इसमें लोक कथाएँ, लोकगीत, लोकनाट्य, कहावतें, मुहावरे और अन्य पारंपरिक संस्कृति एवं परिवेश से अवगत कराना है।
- रंगमंच की परख विद्यार्थियों में बौद्धिक एवं कौशल क्षमता में सहायक हो सकते हैं।
- रंगमंच और लोक–साहित्य के अध्ययन से साहित्य और समाज को नए सिरे से समझने में सहायक हो सकते हैं।

पाठ्य विषय :–

इकाई–01 (15 घंटे)

- रंगमंच की अवधारणा, आशय और प्रकार
- रंगशिल्प, रंगभाषा, ध्वनि, लोकमंच, देशज संवेदना, रंगमंच और लोकसाहित्य की प्रकृति
- लोकसाहित्य की अवधारणा, स्वरूप, आशय और क्षेत्र
- लोकभाषा, परिनिष्ठित भाषा, मानक भाषा की प्रकृति

इकाई–02 (15 घंटे)

- लोक संस्कृति और लोकसाहित्य की अवधारणा
- मिथक और लोकसाहित्य, लोकसाहित्य के विविध रूप लोकगीत, देवी गीत, ऋतु गीत, श्रम गीत, विवाह गीत, संस्कार गीत, जन्म एवं मृत्यु संबंधित गीत एवं उनका भाषिक सौंदर्य

इकाई–03 (15 घंटे)

- लोकनाट्य परंपरा, लोकगाथा, लोक आख्यान, आल्हा, पंडवानी, चंदैनी, रामलीला, रासलीला, नौटंकी, लावनी, प्रहसन, बिदेसिया, नाचा, खयाल, बारहमासा

इकाई–04 (15 घंटे)

- बिदेसिया भिखारी ठाकुर
- लोरिक चंदा भोलाराम दास
- चरनदास चोर हबीब तनवीर

संदर्भ–ग्रंथ

1. **लोक–साहित्य की भूमिका** — धीरेंद्र वर्मा
2. **लोक–साहित्य विज्ञान** — डॉ. सत्येंद्र
3. **छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य और भाषा** — डॉ. बिंहारी लाल साहू
4. **रंगदर्शन कृ नेमीचंद्र जैन**
5. **भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच** — सीताराम चतुर्वेदी
6. **लोकसाहित्य की प्रासंगिकता** — संपादक डॉ. जयश्री शुक्ला, डॉ. राजेश चतुर्वेदी

ई–संसाधन (E-Resources) :-

1. **ई जर्नल्स, ई पुस्तकें दृश्य** – श्रव्य सामग्री, वीडियो व्याख्यान, इलेक्ट्रॉनिक डाटाबेस, ई–शोधलेख्ज्ञं
2. **www.ndl.iitkgp.ac.in (National Digital Library of India)**

पाठ्यक्रम: सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी

सेमेस्टर: चतुर्थ सेमेस्टर

प्रश्न पत्र: परियोजना कार्य – रचनाकार का विशेष अध्ययन

कोर्स कोड: MHNT405

पाठ्यक्रम अधिगम–परिणाम (Course Learning outcome)

- प्रथम विकल्प में रचनाकार के विशेष अध्ययन को समावेशित किया गया है। प्रस्तुत परियोजना कार्य के अंतर्गत विद्यार्थी द्वारा निर्दिष्ट रचनाकारों में से किसी एक रचनाकार के समग्र कृतित्व का गहन अध्ययन एवं उसका सम्यक् मूल्यांकन करते हुए न्यूनतम 10000 शब्दों में परियोजना कार्य प्रस्तुत किया जाना अपेक्षित है।
- विद्यार्थी किसी एक रचनाकार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के गहन अध्ययन से भविष्य में रचनाकार के साहित्य पर शोध कर सकेंगे।
- विद्यार्थी परियोजना कार्य के अंतर्गत उक्त रचनाकारों में से किसी एक की रचनाओं के अध्ययन एवं सम्यक् मूल्यांकन में सक्षम होंगे।
- विद्यार्थी रचनाकार का हिंदी साहित्य में योगदान और महत्त्व जान सकेंगे।

पाठ्य विषय (रचनाकारों की सूची) :–

क्रमांक	साहित्यकार	प्रमुख पहचान ६ योगदान
1	कबीरदास	निर्गुण भक्ति, सामाजिक सुधार, साखी एवं दोहे
2	मलिक मोहम्मद जायसी	'पद्मावत' के रचयिता
3	तुलसीदास	'रामचरितमानस' के रचयिता
4	सूरदास	'सूरसागर' के रचयिता
5	मीराबाई	भक्ति काल की प्रमुख कवयित्री
6	केशवदास	'रसिकप्रिया' एवं कविप्रिया के रचयिता
7	बिहारी	'बिहारी सतसई' के रचयिता
8	भूषण	शिवाजी एवं छत्रसाल की वीरता का वर्णन
9	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	हिंदी नवजागरण के प्रमुख साहित्यकार
10	जयशंकर प्रसाद	'कामायनी' के रचयिता
11	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	मुक्त छंद के प्रवर्तक
12	प्रेमचंद	यथार्थवादी कथा साहित्य के प्रमुख लेखक
13	महादेवी वर्मा	हिंदी की प्रमुख कवयित्री एवं निबंधकार
14	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	'हिंदी साहित्य का इतिहास' के लेखक
15	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	हिंदी साहित्य एवं संस्कृति के विद्वान
16	हरिवंश राय बच्चन	'मधुशाला' के रचयिता
17	सुभद्रा कुमारी चौहान	'झाँसी की रानी' कविता के लिए प्रसिद्ध
18	यशपाल	प्रगतिवादी साहित्य के प्रमुख लेखक
19	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	नई कविता एवं प्रयोगवाद के प्रवर्तक
20	शिवानी	लोकप्रिय हिंदी उपन्यासों की लेखिका

6/08/26

विवरण	अंक
आंतरिक अंक	50
बाह्य अंक	50
न्यूनतम प्राप्तांक	36

16/08/26

पाठ्यक्रम: सेमेस्टर पाठ्यक्रम एम. ए. – हिंदी

सेमेस्टर: चतुर्थ सेमेस्टर

वैकल्पिक–लघु शोध प्रबंध

पाठ्यक्रम अधिगम–परिणाम (Course Learning outcome)

- मनुष्य की प्रवृत्ति जिज्ञासु होती है। इसी कारण मनुष्य जीवन पर्यंत अनुसंधान में लगा रहता है। नए–नए सिद्धांत, नए–नए तथ्य, नई–नई उपलब्धियां इसी शोध का परिणाम हैं।
- हिंदी भाषा में अनेक विधाओं की रचनाएं कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, लघुकथा, कविता, महाकाव्य, खण्डकाव्य, व्यंग्य, यात्रा वृतांत, संस्मरण, रेखाचित्र आदि निरंतर लिखे जा रहे हैं, और प्रकाशित हो रहे हैं। इन प्रकाशित रचनाओं का अध्ययन करना तथा उनकी समीक्षा करना आवश्यक है।
- लघु शोध प्रबंध से विद्यार्थी शोध प्रविधि से परिचित हो सकेंगे।
- शोध के क्षेत्र में नए साहित्यकारों की रचनाएं उनके साहित्य में योगदान और महत्त्व को अनावृत करके आने वाले विद्यार्थी का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे।

पाठ्य विषय :–

किसी भी विधा की कम से कम 02 अधिक से अधिक चार नवीनतम कृतियों का अध्ययन और समीक्षा न्यूनतम 80–100 पृष्ठों में की जाए।

छात्र द्वारा चयन की गई कृति का प्रकाशन 03 वर्ष पूर्व हुआ हो। उदाहरण छात्र यदि 2024 की मुख्य परीक्षा में सम्मिलित हो रहे है, तो उनके द्वारा चयन की गई कृति का प्रकाशन वर्ष 2021 के पहले का नहीं होना चाहिए।

विवरण	अंक
आंतरिक अंक	50
बाह्य अंक	50
न्यूनतम प्राप्तांक	36

16/08/26